IJCRM
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Article

सोशल मीडिया: किशोरों एवं युवाओं पर नियंत्रण का सामाजिक अभिकरण

नीलम संजीव एक्का*

समाजशास्त्र विभाग, दाऊ उत्तम साव शासकीय महाविद्यालय, मचांदुर, दुर्ग, छ.ग. भारत

Corresponding Author: * नीलम संजीव एक्का

DOI: https:/doi.org/10.5281/zenodo.15065338

सारांश

मनुष्य मूलत:एक सामाजिक प्राणी है इसलिए वह स्वाभाविक रूप से समाज में रहना पसंद करता और रहता है। संसार में मानव ने अनेक सृजन किए हैं जिनमें समाज सबसे महत्वपूर्ण मानव निर्मित तथ्य है। मानव समाज अपने सदस्यों के व्यवहारों को नियंत्रित करने अर्थात समाज स्वीकृत तौर तरीकों के अनुरूप ही सदस्यों की गतिविधियां या व्यवहार हों,इस उद्देश्य से समाज अपनी विभिन्न अभिकरणों,संस्थाओं के माध्यम से लोगों के व्यवहारों,गतिविधियों को निरंतर नियंत्रित करने का प्रयास करता है। पिछले दशक से सोशल मीडिया में लोगों की सहभागिता निरंतर बढ़ती ही जा रही है विशेषकर किशोरों और युवाओं की | इसी तारतम्य में मानव समाज ने भी किशोर एवं युवाओं के असामाजिक व्यवहारों को नियंत्रित करने के लिए सोशल मीडिया को किस प्रकार सामाजिक नियंत्रण का एक नवीन अभिकरण के रूप में उपयोग करना शुरू किया है? इस शोध-पत्र में यह उजागर करने की कोशिश की गई है |

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 15-08-2024
- **Accepted:** 24-09-2024
- **Published:** 29-10-2024
- **IJCRM:**3(5); 2024: 240-241
- **©2024, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Manuscript

नीलम संजीव एक्का. सोशल मीडिया: किशोरों एवं युवाओं पर नियंत्रण का सामाजिक अभिकरण. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary.2024; 3(5):240-241.

मुख्य शब्द: समाज, सामाजिक नियंत्रण, छपरी, सिगमा, किशोर, अभिकरण, स्लैंग |

प्रस्तावना

कुछ दशक पहले तक यह प्रचलित था कि मानव के जीवन के लिए तीन मूलभूत आवश्यकताएं होती हैं; रोटी, कपड़ा और मकान। परंतु वर्तमान में वो मूलभूत आवश्यकताएं तीन से बढ़कर चार हो चुकी हैं, विशेषकर किशोरों एवं युवाओं के जीवन के लिए। वास्तव में वर्तमान में किशोरों एवं युवाओं के संदर्भ में देखा जाए तो सोशल मीडिया जीवन के अस्तित्व के लिए वह चौथी आवश्यकता बन चुकी है क्योंकि सोशल मीडिया का सबसे ज्यादा प्रभाव किशोरों और युवाओं पर ही पड़ता हुआ प्रतीत होता है| इन दिनों किशोर एवं युवा अपने विचारों को सोशल मीडिया के माध्यम से ही साझा करते हैं तथा अपनी पहचान बनाने के लिए भी सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म का उपयोग करने लगे हैं | संसार के विभिन्न प्राणियों के समान ही मनुष्य भी एक प्राणी है। किन्तु अन्य प्राणियों और मनुष्य के बीच अंतर का स्पष्ट रेखा खींचने वाला तथ्य है मानव के पास समाज की मौजूदगी। चूंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसलिए वह समाज से अलग नहीं रह सकता। वह समाज में ही रहकर समस्त क्रियाकलाप, गतिविधियां करते हुए जीवनयापन करता है। समाज ही वह तथ्य जो मनुष्य को पशुओं से अलग करता है,वास्तविकता तो यह है कि मनुष्य में भी विभिन्न पशुओं के समान ही प्रवृत्तियां होती हैं किन्तु समाज मनुष्य के उन पशु प्रवृत्तियों को अपने साधनों के द्वारा नियंत्रित करता है। अपने सदस्यों के व्यवहारों को नियंत्रित करने के लिए समाज द्वारा विभिन्न साधनों अथवा अभिकरणों का प्रतिपादन किया जाता रहा है; जैसे प्रथा,परंपरा, जनरीति, धर्म, कानून इत्यादि।

सूचना प्रौद्योगिकी के निरंतर उन्नत होते वर्तमान दौर में जब समाज की मूल्यों में निरंतर गिरावट दिखलाई देने लगा है,ऐसे समय में

© 2024 नीलम संजीव एक्का. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

किशोर एवं युवा वर्ग के व्यवहारों,गतिविधियों,क्रियाकलापों को नियंत्रित कर समाज स्वीकृत अनुरूप बनाए रखना बहुत बड़ी चुनौती बनकर प्रकट हुआ है। सामान्यतया 13 से 18 वर्ष के आयु समूह को किशोरावस्था कहा जाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था है जिसमें मानव (बालक/बालिका) किसी के नियंत्रण में नहीं रहना चाहता है।इस अवस्था में मानव के शरीर में कुछ विशिष्ट परिवर्तन आने लगते हैं जिसके कारण किशोर के मन में स्वतंत्रता की इच्छा बलवती होने लगती है और वह न तो अपने माता-पिता के और न ही सामाजिक –सांस्कृतिक नियंत्रण में रहना चाहता है। आमतौर पर 19 से 25 वर्ष के आयु समूह को युवावस्था/युवाकाल कहा जाता है,स्पष्ट है कि किशोरावस्था के बाद मानव वयस्कावस्था में कदम रखता है। युवा पीढी सम्पूर्ण मानव समाज की रीढ़ की हड्डी होती है जिस पर देश और समाज का भविष्य निर्भर होता है। युवा की विशेषता है कि उनमें तेजी,स्फूर्ति और जोश से लबरेज होना। किन्तु महत्वपूर्ण यह है कि युवा अपनी तेजी,स्फूर्ति और जोश का उचित दिशा में उपयोग करें, यही सुनिश्चित करना और कराना अभिभावकों एवं समाज के लिए बड़ी चुनौती है।

सोशल मीडिया: किशोर और युवाओं के नियंत्रक के रूप में:-

अपने सदस्यों के व्यवहार समाज द्वारा स्वीकृत अथवा मान्यता प्राप्त विधियों के अनुरूप ही हों, यह सुनिश्चित करने के लिए समाज विभिन्न माध्यमों/अभिकरणों के द्वारा लोगों के व्यवहार को नियंत्रित करती है। इन दिनों सोशल मीडिया में कुछ विशेष स्लैंग प्रचलित हो रही हैं उन किशोरों एवं युवाओं के लिए जिनके कार्य,व्यवहार,गतिविधियां समाज के स्वीकृत तरीकों के विपरीत होती हैं।उनमें से कुछ प्रचलित स्लैंग :-

(1) छपरी- छपरी शब्द सोशल मीडिया में किशोरों एवं युवाओं में प्रचलित स्लैंग है।जिसका प्रयोग किशोरों एवं युवाओं के द्वारा ही ऐसे किशोरों एवं युवाओं के लिए किया जा रहा है जिनके हावभाव, गतिविधियां, फैशन, हेयर कट इत्यादि अजीबोगरीब अर्थात सामाजिक मानदंडों के विपरीत होते हैं। वास्तव में सोशल मीडिया में प्रचलित छपरी एक नकारात्मक स्लैंग है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति बचना चाहता है|

(2) सिगमा- यह स्लैंग सोशल मीडिया में ऐसे व्यक्तियों के लिए प्रयोग किया जाता है जो अपनी झूठी शानो –शौकत, झूठी अमीरी दिखाने के लिए जाने जाते हैं।

(3) पापा की परी- लापरवाह, गुस्सैल, किसी की परवाह न करना, अव्यवस्थित दिनचर्या, अति आत्मविश्वासी इत्यादि लक्षणों से युक्त बालिका, किशोरी या युवती के लिए सोशल मीडिया में इस "पापा की परी" स्लैंग का प्रयोग किया जाता है |

(4) मम्मा के मगरमच्छ- यह स्लैंग ऐसे बालक, किशोर अथवा युवक के लिए प्रयोग किया जाता है जो स्वभाव से बेहद लापरवाह,संस्कारविहीन,गुस्सैल स्वभाव, अव्यवस्थित दिनचर्या वाले होते हैं।

(5) मम्मा बॉय- ऐसे किशोर,युवा जो बेहद गैर जिम्मेदार हो, जिसे अपनी दिनचर्या के छोटे छोटे कार्यों में भी अपनी माता के सहयोग की आवश्यकता होती है अर्थात जो अपनी मम्मी के बिना कोई कार्य नहीं कर सकता हो ऐसे व्यक्ति को सोशल मीडिया में ''मम्मा बॉय'' कहा जाता है।

निष्कर्ष

समाज की प्रकृति गतिशील और परिवर्तनशील है। अब तक के इतिहास में जो भी सामाजिक परिवर्तन हुए उसकी गति वर्तमान दौर में हो रहे सामाजिक परिवर्तन की तुलना में अत्यंत धीमी रही है। आधुनिक संसार के समाज में परिवर्तन की गति में तीव्रता का एक महत्वपूर्ण कारक सोशल मीडिया भी है।परिवर्तित समाज के ढांचे और कार्य के तरीकों में बदलाव आया है, ये बदलाव समाज के नियंत्रक अभिकरणों में भी आए हैं और सोशल मीडिया में प्रचलित स्लैंग परिवर्तित समाज के नियंत्रण के अभिकरण के रूप में प्रचलित हो चुके हैं। कुछ वर्षों पूर्व तक पापा की परी का तात्पर्य एक गुणवान बालिका से था जो पिता के लिए गर्व का कारण होती थी किन्तु वर्तमान परिवर्तित समाज में मुख्यत: सोशल मीडिया की दुनिया में पापा की परी एक बिगड़ैल बालिका का बोध कराती है । सोशल मीडिया में प्रचलित उपरोक्त सभी स्लैंग नकारात्मक अर्थ प्रकट करते हैं इसलिए सामान्य तौर पर लोग इससे बचना चाहते हैं या ऐसा कहलाना पसंद नहीं करते हैं। वस्तु स्थिति तो ये है कि सोशल मीडिया की दुनियाँ में समाज अपने सदस्यों के असामाजिक व्यवहारों पर अंकुश लगाकर सामाजिक मूल्यों के अनुरूप व्यवहार करने के लिए बाध्य करने का प्रयास कर रहा है| अंतत: कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया के माध्यम से समाज ने सोशल मीडिया में सामाजिक नियंत्रण के उपकरणों/अभिकरणों का विकास करना शुरू कर दिया है।

संदर्भ सूची

1. आहूजा आर. सामाजिक समस्याएं. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स; 2006. पृष्ठ 182-206.
2. आहूजा आर, आहूजा एम. समाजशास्त्र: विवेचना एवं परिप्रेक्ष्य. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स; 2008. पृष्ठ 208-220.
3. चंद्र बि. आधुनिक भारत. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद; 2004. पृष्ठ 83-95.
4. दोसी एसएल, जैन पीसी. समाजशास्त्र: नई नीतियाँ दिशाएँ. जयपुर: नेशनल पब्लिशिंग हाउस; 2002. पृष्ठ 107-112.
5. मुखर्जी आरएन. सामाजिक विचारधारा. दिल्ली: विवेक प्रकाशन; 2003. पृष्ठ 18-15, 366-374.
6. पांडेय मैनजर. भारतीय समाज में प्रतिरोध की परंपरा. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2013. पृष्ठ 28-33.
7. पिकेटी थॉमस, बागला बीएस, (अनुवादक). पूंजी. नई दिल्ली: यूनिकॉर्न बुक्स; 2013. पृष्ठ 616-620.
8. रावत हरिकृष्ण. उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोष. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स; 2017. पृष्ठ 438-439.
9. शर्मा रामनाथ, शर्मा राजेंद्र कुमार. सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक नियंत्रण. नई दिल्ली: अटलांटिक प्रकाशन; 2003. पृष्ठ 18-150.
10. सिंह जेपी. समाजशास्त्र: अवधारणाएँ एवं सिद्धांत. नई दिल्ली: प्रेन्टिस हॉल ऑफ इंडिया; 2005. पृष्ठ 391-412.

© 2024 नीलम संजीव एक्का. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/